मेहनतकशों का पैग़ाम — मेहनतकशों के नाम

मज़दूर मोर्चा

पाक्षिक

Email : mazdoormorcha1987@gmail.com
www.mazdoormorcha.com

Postal Reg. No. L/H.R/FBD/463-06 /R.N.I. No. 66400/97

- कर्ण दलाल के आतंकवाद का शिकार बना एक परिवार 3
- गर्ल्स स्कूल से लड़कियां लाता था राम रहीम, गुफा में बना रखा था स्विमिंग पूल 4
- उस पत्रकार की कहानी जिसने राम रहीम को उखाड़ फेंका 5
- नीमका जेल: पोल खुली तो लुटेरा जेलर घबराया 8
- रेलवे दुर्घटनाएं और राजनीति

वर्ष 30 | अंक 20 | फरीदाबाद | 1-15 सितम्बर 2017 | फोन : - 9999595632 | ₹ 2

शारदा राठौर भाजपा टिकट पर लड़ेगी अगला चुनाव ?

कांग्रेस टिकट पर दो बार यहां से विधायक निर्वाचित हो चुकी शारदा राठौर दो साल बाद होने वाला चुनाव कहां से और किस टिकट पर लड़ेंगी, इस पर आजकल चर्चा गर्म है।

जुलाई के अन्तिम सप्ताह में स्थानीय पंजाबी धर्मशाला में बुलाई गई उनकी कार्यकर्ता मीटिंग ने सिद्ध कर दिया कि उनमें आज भी पूरा दम-ख़म है सत्तारुढ़ विधायक की जनसभा में जितने लोग नहीं होते उससे दुगने तो शारदा की कार्यकर्ता बैठक में पहुंच गये। जनता में उनकी इसी पकड़ से भाजपा नेतृत्व काफ़ी प्रभावित बताया जाता है।

मज़दूर मोर्चा, बल्लबगढ ब्यूरो

पिछले दिनों दिल्ली के स्थानीय निकाय चुनावों में यह सिद्ध कर दिया था कि भाजपा बोझ बन चुके जनप्रतिनिधियों को ढोने में कतई यकीन नहीं रखती। भाजपा नेतृत्व इस तरह के बोझ को दुध से मक्खी की तरह निकाल फ़ेंकने में ज़रा भी नही झिझकता। वह सरकार की तमाम नाकामियों का ठीकरा ऐसे जनप्रतिनिधियों के सिर पर फ़ोड़ कर अपनी गद्दी को बचाय रखने में विश्वास करता है।

उधर शारदा राठौर को भी पूरी तरह निपट चुकी कांग्रेस से चिपके रहने में कोई रूचि रह नहीं गयी है। कांग्रेस की हो चुकी इस दुर्दशा को शारदा ने भांप तो 3 बरस पहले ही लिया था। लेकिन केन्द्रीय गृह मंत्री राजनाथ सिंह व भाजपा अध्यक्ष अमितशाह से मुलाकात के बावजूद भाजपा टिकट न मिल पाने की वजह से उस वक्त उन्हें मन मसोस कर रह जाना पड़ा था। उस वक्त उनका भाजपा की ओर झुकने का एक कारण कांग्रेस पार्टी की अन्दरूनी धड़ेबंदी भी थी। तत्कालीन मुख्यमंत्री भुपेन्द्र सिंह हुड्डा शारदा को अपनी पार्टी का टिकट देना चाहते थे जबकि पार्टी प्रधान अशोक तंवर इनके कट्टर विरोधी थे, लिहाज़ा उन्हें टिकट नहीं और कांग्रेस को यह सीट नहीं मिल पाई। जानकार तो यहां तक कहने से भी नहीं चूकते कि कांग्रेस ने यह सीट भाजपा को प्लेट में रखकर दे दी।

भरोसेमंद सूत्रों के अनुसार राठौर द्वारा बुलाये गये उक्त कार्यकर्ता सम्मेलन में जुटे लोग कांग्रेस के नाम पर नहीं बल्कि शारदा के व्यक्तिगत बुलावे पर अधिक थे। सम्मेलन में मौजूद अधिकांश लोगों ने उन्हें

बिना शर्त अपना नेता मानते हुए, भविष्य की राह तय करने का अधिकार दिया। यानी शारदा राठौर जिस पार्टी से जुड़ना चाहें जुड़ें तमाम कार्यकर्ता उनके साथ रहेंगे।

अब सवाल यह खड़ा होता है कि भाजपा इन्हें टिकट कहां से देगी? शारदा की पहली पसंद तो निश्चित ही बल्लबगढ़ रहेगी लेकिन वहां से मौजूदा विधायक मूलचंद के कारनामे अभी शायद इतने भयंकर नहीं हुए हैं जिससे भाजपा को यह सीट डूबती नज़र आये। लेकिन कल को यदि ऐसी स्थिति बनती है तो भाजपा मूलचंद की जगह शारदा को लाने में पल भर भी नहीं लगायेगी।

दूसरी ओर भाजपा की अन्दरूनी धड़ेबंदी के चलते फ़रीदाबाद से विधायक एवं हरियाणा सरकार के पावरफुल मंत्री विपुल गोयल, स्थानीय सांसद एवं केन्द्रीय राज्य मंत्री कृष्णपाल गूजर के समर्थकों को चुन-चुन कर ठिकाने लगाने की जुगत में है। ऐसे में यदि शारदा को बल्लबगढ़ से भाजपाई टिकट नहीं मिलता है तो विपुल गोयल चाहेंगे कि उन्हें पृथला से टिकट दिलाया जाय। पृथला से फ़िलहाल मायावती की बसपा टिकट पर निर्वाचित टेक चन्द शर्मा विधायक है। कुछ सौ वोटों से जीते टेक चन्द ने अभी तक इतने काले कारनामे कर लिये हैं कि भविष्य में शायद ही कभी अपनी जमानत बचा पायें। उनके मुकाबले हारे हुए नयनपाल रावत की स्थिति बेशक मजबूत है लेकिन सांसद कृष्णपाल घड़े में होने के नाते उनकी टिकट पर खतरा मंडराने के पूरे आसार हैं।

इसका बड़ा कारण कृष्णपाल के मुकाबले विपुल का बढता कद है। जहां कृष्णपाल केन्द्रीयमंत्री होते हुए शहर की गलियों व नालियों में नारियल फ़ोड़ते घूम रहे हैं वहीं विपुल अपने उद्योग मन्त्रालय का तो पूरा उपयोग अपना कद बढाने में

शेष पेज दो पर

हुड्डा भी भाजपा के नाम पर ब्लैकमेल कर रहे हैं

हरियाणा के पूर्व मुख्यमन्त्री भूपेन्द्र सिंह हुड्डा भी भारतीय जनता पार्टी की शरण में जाते प्रतीत हो रहे हैं। लगता है सोनियां गांधी के दामाद वाड्रा केस में जेल जाने का खौफ़ अब उन्हें सताने लगा है। केस तो वैसे 'हूडा' प्लाट आवंटन मामले का भी खट्टर सरकार तैयार कर रही है लेकिन वाड्रा वाला केस ज़्यादा ख़तरनाक समझा जा रहा है। इसके अलावा कयास यह भी हैं कि हरियाणा कांग्रेस अध्यक्ष अशोक तंवर पर हाई कमान का दबाव बनाने के लिये हुड्डा जी भाजपा की ओर पींग बढ़ा रहे हैं। लेकिन दूसरी ओर ऐसे राजनीतिज्ञों की भी कमी नहीं है जो सोचते हैं कि भाजपा हाई कमान हरियाणा की खट्टर सरकार एवं पार्टी नेतृत्व से संतुष्ट नहीं हैं। केन्द्रीय नेतृत्व समझ चुका है कि यदि खट्टर व अन्य मौजूदा नेताओं के नेतृत्व में आगामी विधानसभा चुनाव लड़ा गया तो उनका बंटाधार होना तय है। ऐसे में उन्हें किसी सशक्त जाट नेता की तलाश है। हो सकता है भाजपा को वह गुण भूपेन्द्र सिंह हुड्डा में दिखाई देने लगा हो।

जब सिपाहियों ने आई.जी. को थप्पड़ मारा

पंचकुला (म.मो.) बलात्कारी गुरमीत को सिरसा स्थित डेरा से लाने का काम आई.जी. के.के. राव तथा गुड़गांव में तैनात डीसीपी सुमित कुमार को सौंपा गया था। ये लोग पूरे काफ़िले सहित बलात्कारी को पंचकुला स्थित कोर्ट तक ले भी आये। लेकिन दोषी ठहराये जाने के बाद जब उसे हेलिकॉप्टर तक ले जाने के लिये के के राव सरकारी गाड़ी में बैठाने के लिये ले जाने लगे तो बलात्कारी की सुरक्षा में हरियाणा सरकार द्वारा तैनात पुलिस के कमांडों दस्ते ने जी जान से कोशिश की कि उसे सरकारी गाड़ी की बजाय उसकी अपनी निजी गाड़ी में बैठाकर हेलिकॉप्टर तक ले जाया जाय।

आई.जी. राव ने जब इसकी इजाजत नहीं दी तो पूरा कमांडो दस्ता, जोकि हरियाणा पुलिस के ही सिपाही-हवलदार थे, अपने ही आई.जी. पर टूट पड़े। वे किसी भी किमत पर अपने बलात्कारी बाबा को पुलिस की गिरफ़्त से छुड़ा कर अपनी निजी गाड़ी में ले जाना चाहते थे। इसके लिये उन्होंने अपने महकमाना अनुशासन की भी परवाह नहीं करी। करते भी क्यों जब बरसों से माल-मलाई बाबा की खाते आ रहे हैं तो अब बाबा को कैसे छोड़ देते।

ऊपरी तौर पर देखने से तो यह बहुत मामूली सी बात लगती है। क्या फ़र्क पड़ता था यदि पुलिस की बजाय उसकी निजी गाड़ी में बैठा कर उसे हैलीपैड तक ले जाते तो। लेकिन बात इतनी सरल नहीं थी।। आपराधिक षड़यन्त्रकारी बाबा द्वारा बनाई योजना के अनुसार यदि वह एक बार अपनी गाड़ी में बैठ जाता तो उन्होंने गाड़ी भगा लेनी थी और उसके काफ़िले में आई सैंकड़ों गाड़ियों ने रास्ते जाम करके पुलिस को रोकना था। इस पर पुलिस व बाबे के गुंडों में खुली फ़ायरिंग होनी थी।

जानकार बताते हैं कि योजनानुसार तय था कि यदि उसे दोषी करार दिया जाता है तो वह गाड़ी में रखे अपने लाल बैग को मंगवायेगा और जब उसने वह लाल बैग मंगवाया तो उसके तमाम गुंडे एक्शन के लिये अलर्ट हो गये। लेकिन पुलिस को योजना की भनक लग चुकी थी, लिहाजा पुलिस ने उसे हेलीपैड तक ले जाने का रूट ही बदल दिया जबकि उसके वफ़ादार कमांडों चाहते थे कि उसी रूट से कोर्ट परिसर से बाहर निकलकर बाबा की ही गाड़ी से जायें। पुलिस ने ऐसा होने नहीं दिया तथा 5 कमांडों को मौके पर ही गिरफ़्तार कर लिया तथा साजिश में शामिल 2 कमांडों को सिरसा से गिरफ़्तार कर लिया।

वैसे ध्यान से देखा जाय तो ऐसे भयंकर अपराधी को जेड प्लस सुरक्षा के नाम पर कमांडों उपलब्ध कराना, वह भी सरकारी खर्च पर, सरकार की बड़ी भारी मुर्खता थी।

जज जगदीप सिंह को सारा देश सेल्यूट क्यों कर रहा है?

क्योंकि भ्रष्टाचार और निकम्मेपन रूपी दलदल का रूप ले चुकी न्यायपालिका में जगदीप सिंह एक कमल की फुल की तरह नज़र आ रहे हैं। देखा जाय तो जगदीप सिंह ने कोई अनोखा काम नहीं किया है। उन्होंने एक दोषी को, दोष सिद्ध होने पर कानून एवं न्याय सम्मत सज़ा ही तो दी है।

परन्तु इसे अनोखा एवं कठिन इसलिये समझा जा रहा है कि तमाम राजनीतिक दल चाहे सत्ता में हों या विपक्ष में इस दोषी के पैरोकार एवं परम भक्त हैं। इनमें से कोई नहीं चाहता था कि इस पाखंडी गुनाहगार को सज़ा दी जाय। इन हालात में आम जनता को भी लगता था कि यह पाखंडी जगदीप सिंह की कोर्ट से भी बच निकलेगा। यह तो इत्तफ़ाक है कि यह मामला उनके शिकंजे में

जज जगदीप सिंह : कीचड़ में खिला कमल

आ फ़सा।

यदि न्यायपालिका में भ्रष्टाचार एवं निकम्मापन न होता तो यह धूर्त एवं पाखंडी गुनाहगार 10-15 साल पहले ही जेल में पहुंच गया होता; ठीक वैसे ही जैसे इसके कई सहअभियुक्त बरसों से अम्बाला जेल में पड़े हैं। मुकदमे दर्ज होते ही इस मुख्य अभियुक्त को तो राज्य में उच्च न्यायालय ने अग्रिम जमानत प्रदान कर दी जबकि इसके हुकुम पर हत्यायें करने वाले जेलों में पड़े हैं। इसे उच्च न्यायालय द्वारा दी गयी अग्रिम जमानत को लेकर भी लेन-देन की चर्चायें बहुत गर्म हुई थी। ठीक उसी तरह की चर्चायें इस फ़ैसले को लेकर भी चल रही थीं। लेकिन जज जगदीप सिंह ने सिद्ध कर दिया कि हरेक जज बिकाऊ नहीं होता। इसी लिये आज जनता उन्हें राष्ट्रीय हीरो का दर्जा देकर सेल्यूट कर रही है।

बलात्कारी का समर्थक भाजपाई बाबा

भाजपा, कांग्रेस, अकाली व चौटालों के संरक्षण में पला बढा गुरमीत राम रहीम को बलात्कार का दोषी ठहराये जाने के बाद भाजपा के भगवाधारी सांसद साक्षी महाराज ने अदालत की इस कार्यवाही को भारतीय संस्कृति पर हमला बताते हुए कहा कि जिस बाबा के 6 करोड़ अनुयायी हों उसे मात्र एक-दो महिला की शिकायत पर कैसे दोषी ठहराया जा सकता है? न्यायपालिका को धमकी देते हुए कहा कि यदि बलात्कारी राम रहीम को सज़ा सुनाने के बाद जो हिंसक परिणाम होंगे उसके लिये खुद न्यायपालिका जिम्मेदार होगी।

भाजपाई सांसद की इस 'ज्ञानवर्द्धक' टिप्पणी के लिये देशवासियों को उनका शुक्रगुज़ार होना चाहिऐ। इस टिप्पणी के द्वारा उन्होंने बता दिया कि आरएसएस व भाजपा की फ़िलोसफ़ी एवं समझ क्या है। ये लोग जिस भारतीय संस्कृति का राग अलापते हैं उसमें पाखंडी बाबाओं को बलात्कार सहित

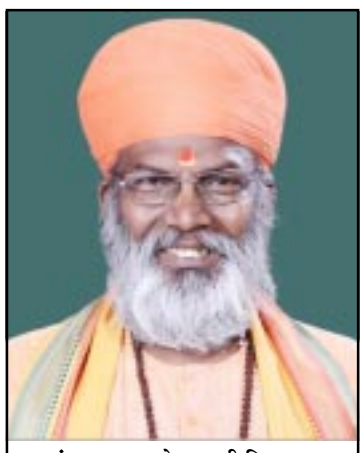

संघ - भाजपा के असली विचारक

सभी कुकर्म करने की छूट है। ठीक वैसे ही जैसे तालीबानी आतंकियों को होती है। इनके लिये देश का कानून एवं संविधान कोई मायने नहीं रखता; ये पाखंडी कानून से ऊपर होते हैं। वैसे यह कोई पहला मौका नहीं है जब किसी संघी नेता ने ऐसी 'ज्ञानवर्धक' बात कही हो, इससे पहले भी अनेकों भाजपा सांसद ऐसी बकवास करते रहे हैं।

दूसरी जो कहीं अधिक काम की बात इस सांसद ने कही कि 6 करोड़ लोग़ों के भगवान पर कोई एक-दो जने द्वारा लगाये आरोपों को कैसे सच माना जा सकता है? मतलब जो बड़ी संख्या में लोग़ों को बहला-फुसला कर या डरा धमका कर या लोभ लालच देकर अपने साथ जोड़ ले और धर्म की बड़ी सी दुकान खोल ले तो फ़िर उस पर कोई कानून लागू नहीं होगा, वह चाहे कत्ल करे या बलात्कार, सब माफ़ है।

संघ परिवार से जुड़े तमाम लोगों की मानसिकता को समझने के लिये, रंगे सियार रूपी इस सांसद के विचार काफ़ी उपयोगी हैं। यदि इनका निरंकुश राज चलता रहा तो ये लोग ऐसी गुंडागर्दी चलायेंगे।